

पद चालीस का गुप्त इतिहास — संख्या ग्यारह

ग्यारहवीं संख्या

Jeff Pippenger

2026-05-21

योएल की पुस्तक संभवतः पवित्रशास्त्र में उत्तरकालीन वर्षा का सबसे प्रत्यक्ष प्रकाशन है, और योएल आरंभ ही इस प्रकार करता है कि पहले वह लौदीकिया की सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया द्वारा संपन्न धर्मत्याग की चार पीढ़ियों का उल्लेख करता है। योएल के आरंभिक पदों में निरूपित क्रमशः बढ़ती हुई विनाश की वे चार पीढ़ियाँ यहजेकेल अध्याय आठ की क्रमशः बढ़ती हुई चार घृणित बातों के साथ मेल खाती हैं। 1863 से 1888 तक का काल पहली पीढ़ी को निरूपित करता है, और यह मिलरियों के मूलभूत संदेश के अस्वीकार को दर्शाता है, जैसा कि 1843 और 1850 के अग्रणी चार्टों पर प्रदर्शित है, जैसा हबक्कुक अध्याय दो में निरूपित है, और जो उस वाचा का प्रतीक है जैसा कि दस आज्ञाओं की दो पट्टिकाओं द्वारा निरूपित किया गया है।

1888 से 1919 तक उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के अनुभव को अस्वीकार किया, जो ऐसा अनुभव उत्पन्न करता है जिसका प्रतिनिधित्व फिलाडेल्फिया की कलीसिया द्वारा किया गया है। पहली पीढ़ी में विद्रोह का केंद्र नेतृत्व के उस कार्य पर था जिसका प्रतिनिधित्व विलियम मिलर द्वारा किया गया, और 1888 की दूसरी पीढ़ी में भविष्यद्वानी की आत्मा के नेतृत्व के विरुद्ध विद्रोह किया गया। 1919 की तीसरी पीढ़ी का आरम्भ विलियम वॉरेन प्रेस्कॉट की पुस्तक, *The Doctrine of Christ*, से हुआ और इसका अंत 1956 में प्रकाशित पुस्तक, *Questions on Doctrine*, के साथ हुआ। वह तीसरी पीढ़ी संसार के साथ समझौते की पीढ़ी थी, जब एडवेंटवाद ने American Medical Association की चिकित्सा-प्रथाओं की मान्यता, तथा अपने महाविद्यालयों के लिए धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद और रोमन कैथोलिकवाद के शैक्षिक विद्वानों से मान्यता प्राप्त करने का प्रयास किया।

तीसरी पीढ़ी में एलेन व्हाइट की लेखनी से प्राप्त शैक्षिक परामर्श को अस्वीकार कर दिया गया और उसके स्थान पर संसार की मिथ्या शैक्षिक पद्धतियों को स्थापित किया गया, जिनका प्रतिनिधित्व यूनान के शैक्षिक दर्शन द्वारा होता है। यूनानी शिक्षा का प्रतिनिधित्व देवी एथेना द्वारा किया जाता है, जो टेनेसी के नैशविल स्थित प्रतिरूप पार्थेनोन मंदिर में प्रतिष्ठित है।

सच्ची शिक्षा का प्रतिरूप बाइबल में भविष्यद्वक्ता एलीशा से संबंधित भविष्यद्वक्ताओं के विद्यालयों में प्रस्तुत किया गया है। 167 ईसा पूर्व के मक्काबी विद्रोह से लेकर 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश तक का काल, बड़े भाग में, प्राचीन वास्तविक महिमामय देश की संस्कृति और राष्ट्र में यूनानी शिक्षा के प्रवेश के विरुद्ध एक प्रतिवाद था। मक्काबियों का प्रतिरोध हर स्तर पर यूनानी प्रभाव के विरुद्ध एक विद्रोह था, परन्तु यूनान की शैक्षिक प्रभावधारा मक्काबी उत्साहियों के इतिहास और प्रेरणाओं में इतनी व्यापक थी कि इसे इस वास्तविकता से अलग नहीं किया जा सकता कि यूनानी शिक्षा सम्भवतः वह सबसे बड़ा कारक थी जो यहूदियों द्वारा यीशु मसीह को अपने मसीहा के रूप में अस्वीकार करने से संबंधित था। यहूदियों पर यूनानी शिक्षा के नकारात्मक प्रभाव तथा मसीह के प्रति यहूदियों के अस्वीकार और क्रूस पर चढ़ाए जाने में मिथ्या शिक्षा के योगदान की पहचान करते हुए अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं।

मक्काबी विद्रोह आधुनिक आत्मिक महिमामय देश में 1776 के विद्रोह के अनुरूप है। वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका में 4,000 से अधिक पंजीकृत विश्वविद्यालय हैं, जो यूनानी तथा जेसुइट शैक्षिक पद्धतियों के दर्शन पर निर्मित हैं। पिछले दस से अधिक वर्षों की अराजकता और विधिहीनता का प्रत्यक्ष पता संयुक्त राज्य अमेरिका के उन तथाकथित शैक्षिक केंद्रों तक लगाया जा सकता है, जो दशकों से उन विद्यार्थियों को मतान्ध रूप से प्रशिक्षित करते रहे हैं, जिन्हें पहले ही मीडिया और मनोरंजन के स्रोतों द्वारा इस प्रकार ढाला जा चुका था कि वे फ्रांसीसी क्रांति के

काल की शैतानी दार्शनिकताओं से निकली वैश्वीकरणवादी विचारधाराओं को स्वीकार करें। आज के विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी, उन शैक्षिक केंद्रों में प्रवेश करने से पहले ही, सदोम और अमोरा द्वारा निरूपित जीवन-शैली को स्वीकार करने के लिए अभ्यस्त बनाए जा चुके थे; ये केंद्र श्वेत लोगों, मसीहियों और सच्चे अमेरिकी इतिहास पर आक्रमण करने के लिए रचे गए थे। आज संयुक्त राज्य अमेरिका का वह नागरिक जो न्याय की निरन्तर दो-स्तरीय व्यवस्था को समझना चाहता है, जो बाइबल और स्पिरिट ऑफ प्रॉफेसी में पहचाने गए अनुसार न्याय और सत्य के सड़कों पर फेंके जाने को पूरा करती है, उसे यह समझना चाहिए कि वर्तमान परिस्थितियाँ एक उद्देश्यपूर्ण रूप से रचे गए आक्रमण का परिणाम हैं, जिसका मतान्ध शिक्षण जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही ऐसी शैक्षिक व्यवस्था के द्वारा किया जाता है, जो मानवजाति को अभिजन वैश्वीकरणवादियों—अर्थात् अजगर की शक्ति—के नियंत्रण में लाने के लिए बनाई गई है।

एलेन व्हाइट के लेखनों में पाँच प्रमुख विषय हैं: शिक्षा, स्वास्थ्य-सुधार, मसीही जीवन, महान विवाद का विषय, और व्यावहारिक भक्ति। शिक्षा भविष्यद्वाणी की आत्मा के पाँच प्रमुख विषयों में से एक है, और एलेन व्हाइट उतनी ही बाइबिलीय भविष्यद्वाक्ता थीं जितना कि परमेश्वर के वचन में उल्लिखित प्रत्येक भविष्यद्वाक्ता। अन्य बातों के साथ, इसका यह भी अर्थ है कि उनका जीवन एक लाख चवालीस हजार के लिए और उनका एक उदाहरण है। इससे पहले कि कोई यह सोचे कि केवल मसीह ही हमारा आदर्श होना चाहिए; पौलुस कहता है:

क्योंकि यद्यपि मसीह में तुम्हारे दस हजार शिक्षक हों, तौभी तुम्हारे बहुत से पिता नहीं हैं; क्योंकि मसीह यीशु में मैंने सुसमाचार के द्वारा तुम्हें उत्पन्न किया है। इस कारण मैं तुम से विनती करता हूँ, तुम मेरे अनुकरण करनेवाले बनो। 1 कुरिन्थियों 4:15, 16

एक भविष्यद्वाक्ता के रूप में एलेन व्हाइट एक उदाहरण हैं। केवल एक ही अवसर था जब एलेन व्हाइट ने किसी बोर्ड-सदस्य की भूमिका स्वीकार की, और वह अवसर उस कॉलेज की स्थापना के समय था जिसने सच्ची शिक्षा के उन सिद्धांतों को ग्रहण किया था जिन्हें उनकी सेवकाई के पाँच प्रमुख विषयों में से एक के रूप में प्रतिपादित किया गया था। टेनेसी के मैडिसन में स्थित वह कॉलेज, नैशविल, टेनेसी के महानगरीय क्षेत्र के भीतर अवस्थित है। उन्होंने न केवल 1904 से लेकर 1915 में अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व तक मैडिसन कॉलेज के संस्थापक बोर्ड में रहने के लिए सहमति दी, बल्कि उस भूमि के चयन में भी वे निर्णायक रूप से सहायक थीं जहाँ कॉलेज स्थापित किया गया। नैशविल यूनानी शिक्षा-प्रणाली का केंद्र है, जिसने मक्काबियों के इतिहास में यहूदियों को अपने मसीहा को स्वीकार करने से रोकने में सहायता की थी; और मक्काबी उन समयों के धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद का प्रतिरूप हैं जिनमें हम अब जीवित हैं। मक्काबियों की रेखा चालीस के गुप्त इतिहास में दृढ़तापूर्वक प्रस्तुत की गई है, जो उस धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद का प्रतिनिधित्व करती है जिसे अब उसी, (यद्यपि उसके आधुनिक रूप) यूनानी शिक्षा के विनाशकारी फलों से पूर्णतः संस्कारित कर दिया गया है।

एडवेंटवाद की तीसरी पीढ़ी में, उस नेतृत्व ने, जिसने 1888 में भविष्यवाणी की आत्मा को अस्वीकार कर दिया था, अपनी शैक्षिक व्यवस्था को संसार की मान्यता-प्राप्ति की संरचना के अधीन कर देने का चुनाव किया। नैशविल सत्य और मिथ्या—दोनों प्रकार की शिक्षा के प्रतीकात्मक केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है। भविष्यद्वाक्ता ने उसी नगर का चयन किया जिसे संसार ने यूनानी शिक्षा को प्रतिष्ठित करने के लिए चुना था; क्योंकि यूनानी शिक्षा के विपरीत, जो सत्य को संपूर्णता का विनाश करने के लिए पृथक-पृथक विषयों में विभाजित करने पर आधारित है, सच्ची शिक्षा सिस्टर वाइट के अन्य चार प्रमुख विषयों—स्वास्थ्य-सुधार, व्यावहारिक भक्ति, मसीही जीवन, और विशेष रूप से महान विवाद के विषय—का आधारभूत अधिष्ठान है।

यीशु सदा अंत को आरम्भ के द्वारा प्रतिपादित करते हैं, और अदन की वाटिका में हुई परीक्षा उस परीक्षा को प्रतिरूपित करती है जिसका सामना अब संसार कर रहा है। अंत की परीक्षा प्रत्येक बाइबिलीय परीक्षा के समान ही है, क्योंकि परमेश्वर कभी नहीं बदलता। एक बाइबिलीय परीक्षा तीन-चरणीय परीक्षण-प्रक्रिया होती है, जो परीक्षण-प्रक्रिया के अंत में प्रकट होने वाले दो वर्गों को उत्पन्न करती है। पहला स्वर्गदूत इन तीन चरणों को इस प्रकार व्यक्त करता है: परमेश्वर का भय मानो, उसे महिमा दो, क्योंकि न्याय की कसौटी की घड़ी आ पहुँची है। पहला चरण

भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा थी। परमेश्वर के आवश्यक भय का अभाव होने के कारण, हव्वा वृक्ष की परीक्षा में असफल हुई और उस फल को खा लिया जो भले और बुरे दोनों का प्रतिनिधित्व करता था। आदम का परमेश्वर-भय भी उसे वृक्ष के विद्रोह में सम्मिलित होने से न रोक सका, और उन दोनों पर न्याय आ पड़ा, क्योंकि उन्होंने ऐसा जीवन प्रकट किया जिसमें दिव्यता की स्थायी उपस्थिति नहीं थी।

अंतिम दिनों की परीक्षा उस चेतावनी के साथ आरम्भ होती है कि यीशु मसीह के प्रकाशन में, मनुष्यजाति की परीक्षाकाल-सीमा समाप्त होने से ठीक पहले, जो ज्ञान-वृद्धि अनमुहर की गई है उसे ग्रहण किया जाए। चाहे एडवेंटिज़्म के भीतर हों या एडवेंटिज़्म के बाहर, यह परीक्षा हमारे समय में अनमुहर की गई "ज्ञान" की उस वृद्धि को स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने पर आधारित है। ज्ञान की वह परीक्षा उस वाटिका के परीक्षात्मक वृक्ष द्वारा निरूपित है, जो भले या बुरे के ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। सच्ची शिक्षा 1904 में नैशविल, टेनेसी में स्थित और प्रतीकित की गई थी, और मिथ्या शिक्षा 1897 में नैशविल में स्थित और प्रतीकित की गई थी, फिर 1920 में एक स्थायी संरचना के रूप में पुनर्निर्मित की गई। भविष्यद्वक्त्री के जीवनकाल में सच्ची शिक्षा नैशविल में प्रतिष्ठित की गई थी, और मिथ्या शिक्षा भी प्रतिष्ठित की गई थी। 1915 में उसकी मृत्यु के बाद मिथ्या शिक्षा पार्थेनोन मंदिर के दूसरे और स्थायी निर्माण में पुनर्स्थापित की गई, और सच्ची शिक्षा को लाओदीकिया की सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया के नेतृत्व द्वारा संसार के साथ समझौते के माध्यम से अस्वीकार कर दिया गया।

नैशविल का उपनाम, "दक्षिण का एथेंस", 1897 की शताब्दी प्रदर्शनी के केंद्रबिंदु के रूप में उस भवन के चयन को प्रभावित करता था। प्रदर्शनी में अनेक भवन प्राचीन मूल नमूनों पर आधारित थे। तथापि, पार्थेनोन ही एकमात्र ऐसा भवन था जो यथार्थ प्रतिरूप था। आज का नैशविल, टेनेसी, अपने संगीत के लिए प्रसिद्ध है, परंतु जॉनी कैश संग्रहालय के अस्तित्व में आने से पहले, नैशविल अपने गायन के लिए नहीं, बल्कि अपनी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।

1850 के दशक तक, नैशविल ने अनेक उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना करके पहले ही "दक्षिण का एथेंस" उपनाम अर्जित कर लिया था; यह सार्वजनिक विद्यालय-प्रणाली स्थापित करने वाला अमेरिकी दक्षिण का पहला नगर था। शताब्दी के अंत तक, नैशविल में Fisk University, St. Cecilia Academy, Montgomery Bell Academy, Meharry Medical College, Belmont University, और Vanderbilt University सभी अपने द्वार खोल चुके होंगे। उस समय, नैशविल दक्षिण के सबसे सुसंस्कृत और शिक्षित नगरों में से एक माना जाता था, जो संपन्नता और संस्कृति से परिपूर्ण था।

अधर्म का भेद प्रेरित वचन में संज्ञा भी है और क्रिया भी। प्रेरणा शैतान की, और उस पोप की, जिसे सिस्टर व्हाइट शैतान का "दाहिना हाथ" कहती हैं, अधर्म के भेद के रूप में पहचान कराती है। तौभी "अधर्म का भेद" सत्य और भ्रांति के सम्मिश्रण का भी वर्णन करता है। योएल की धर्मत्याग की चार पीढ़ियाँ यहजेकेल अध्याय 8 की क्रमशः बढ़ती हुई चार घृणित बातों के साथ मेल खाती हैं। वे दो साक्षी प्रकाशितवाक्य की पहली चार कलीसियाओं के साथ संगति रखते हैं, और तीसरी कलीसिया का प्रतिनिधित्व कोंस्टैन्टीन के उस समझौते द्वारा होता है जिसमें मसीही धर्म को बुतपरस्ती के साथ मिला दिया गया। वे पहली चार कलीसियाएँ प्राचीन इस्राएल के इतिहास के साथ मेल खाती हैं, जो आधुनिक इस्राएल के इतिहास का प्रतीक है।

प्राचीन इस्राएल की तीसरी पीढ़ी में, इस्राएल के राजाओं ने अन्य राष्ट्रों के साथ ऐसी संधियाँ कीं जिन्हें कभी भी परमेश्वर की प्रजा के साथ संधि में नहीं लाया जाना था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रतिपादित प्राचीन शाब्दिक इस्राएल और मसीही कलीसिया के बीच का समानांतर एक भविष्यदर्शी विषय है, जिसे Habakkuk's Tables शीर्षक अध्ययन में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। योएल उस चौथी और अंतिम पीढ़ी को, जो परमेश्वर की चुनी हुई वाचा-प्रजा होने से "काट डाली" जाती है, यहजेकेल की चार क्रमशः बढ़ती हुई घृणित बातों में सूर्य को प्रणाम करने वाले पच्चीस पुरनियों के साथ संबद्ध करता है। वह चौथी पीढ़ी, जिसमें लॉदीकिया-कालीन सेवेंथ-डे एडवेंटिज़्म रविवार के कानून पर सूर्य को प्रणाम करते हुए काट डाला जाता है, थुआतीरा की चौथी कलीसिया के साथ मेल खाती है, जो या तो 538 में अथवा शीघ्र आने वाले रविवार के कानून में पोपतंत्र के शासन का प्रतीक है। पिरगमुन की तीसरी

कलीसिया “समझौते” का प्रतिनिधित्व करती है, चाहे वह प्राचीन इस्राएल का मूर्तिपूजक राज्यों के साथ संरेखित होना हो, या कॉन्स्टैन्टीन द्वारा मूर्तिपूजा को मसीहियत के साथ मिला देना; और वे दो गवाह प्रकाशितवाक्य तरह के पृथ्वी के पशु की तीसरी पीढ़ी को संबोधित करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका की चार पीढ़ियाँ, जिन्हें अन्य सत्यों के साथ-साथ 400/430 वर्षों की दासता के दौरान मिस्र द्वारा प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया था, उस समय समाप्त हुई जब फ़िरौन लाल समुद्र के जल में डूब गया। वे जल उस राष्ट्र के अंत का चिह्न थे जिस पर न्याय होना था, जब परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता मूसा के द्वारा प्राचीन इस्राएल के लिए छुटकारा उत्पन्न किया। संयुक्त राज्य अमेरिका पर न्याय उस समयावधि में होता है जब परमेश्वर की कलीसिया पर न्याय अपनी समाप्ति को पहुँचता है; इसलिए यह ध्यान देने योग्य है कि जिस जल ने फ़िरौन का जीवन समाप्त किया, वह फ़िरौन पर पूर्वी वायु के छोड़े जाने के द्वारा आया, जो उन जलों को स्थिर रखे हुए थी, जबकि परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को छुड़ा रहा था। पूर्वी वायु तीसरा हाथ है, जो रविवार के कानून पर उस समय प्रहार करती है जब प्रकाशितवाक्य ग्यारह का भूकम्प आता है।

जो पीढ़ी पृथ्वी के पशु की चौथी और अंतिम पीढ़ी से ठीक पहले आती है, वह गणतंत्रीय और प्रोटेस्टेंट—दोनों सींगों पर परिपूर्ण होती है। गणतंत्रीय सींग का वह समझौता, जो उसकी तीसरी पीढ़ी में संपन्न हुआ, प्रथम विश्वयुद्ध के आसपास की अवधि में घटित हुआ, और उसने संयुक्त राज्य अमेरिका के अपनी आर्थिक संरचना को फ़ेडरल रिज़र्व के वैश्वीकरणवादियों के हाथों सौंप देने को चिह्नित किया। उसी अवधि में लौदीकिया-कालीन सेवेंथ-डे एडवेंटिज़्म ने अपने चिकित्सकीय और शैक्षिक कार्य को सांसारिक शिक्षा और चिकित्सा के मानकों के अनुसार “मान्यता-प्राप्त” कराने का प्रयास किया। क्रिया के रूप में “अधर्म का भेद” कॉन्स्टैन्टाइन तथा प्राचीन इस्राएल के राजाओं द्वारा संसार की शक्तियों के साथ किए गए समझौते का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेरणा द्वारा इस समझौते का वर्णन करने के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “समामेलन” है, जिसे एलेन व्हाइट के समय के शब्दकोश में इस प्रकार परिभाषित किया गया था: “to mix or unite in an amalgam; to blend.” भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष समामेलन का वृक्ष है, समझौते का वृक्ष। “अंतिम महान संघर्ष” रविवार व्यवस्था का संकट है, और उस संकट के लिए शैतान की तैयारी “अधर्म का भेद” है, जो मानवीय बुद्धि को दैवीय प्रकाशन के साथ मिला देता है।

“जब सब लोग पक्ष ग्रहण करेंगे, तब शैतान अंतिम महान संघर्ष के लिए अपनी योजनाएँ बड़ी तत्परता से बना रहा है....”

“उन स्वर्गों को सुनो, उन शक्तियों को पहचानो, जो संसार में प्रबल हैं। क्या वहाँ प्रार्थना की कोई वाणी है? क्या तुम कोई ऐसा चिन्ह देखते हो कि परमेश्वर को मान्यता दी जाती है? याजक हैं, और बहुतायत से हैं; परन्तु वे यहोवा की व्यवस्था को अपने पैरों तले रौंद रहे हैं। उनके वस्त्र प्राणों के लोहू से रंजित हैं। भीड़-की-भीड़ दुष्टात्माओं के लिये बलि चढ़ा रही है। देखो, हे तुम जो आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के बीच डगमगा रहे हो। अपनी कल्पना में उन विशाल जनसमुदायों को देखो जो शैतान की वेदी पर उपासना कर रहे हैं। उस संगीत को सुनो, उस भाषा को सुनो, जिसे उच्च शिक्षा कहा जाता है। परन्तु परमेश्वर उसे क्या घोषित करता है?—अधर्म का भेद।” पुस्तिकाएँ, 004, 11.

अंतिम संघर्ष में, जब “सब पक्ष ग्रहण करेंगे,” तब अदन की वाटिका की परीक्षा पुनः दोहराई जाती है। जो परीक्षा आरम्भ में एक वाटिका के मध्य स्थित एक वृक्ष तक सीमित थी, वही अंत में समस्त संसार में पुनः दोहराई जाती है। अंतिम युद्ध से पूर्व शैतान का कार्य “अधर्म का भेद” है, जिसे “उच्च शिक्षा” के रूप में परिभाषित किया गया है! पृथ्वी के पशु की भूमि में “उच्च शिक्षा” का प्रतीक नैशविल, टेनेसी में पाया जाता है, जिसे ‘दक्षिण का एथेंस’ कहा जाता है, जहाँ पार्थेनोन का मंदिर स्थित है—उस सत्य शिक्षा के प्रतिलोम में, जिसका प्रतिनिधित्व कभी नैशविल में मैडिसन कॉलेज करता था। प्रेरित वचन से निम्नलिखित कथन इस लेख के अंत में पूर्णतः उद्धृत किया गया है, परन्तु इस बिंदु पर कुछ बातों पर विचार किया जाना चाहिए।

“इस पृथ्वी के इतिहास के समापन में जो अधर्म का भेद इतनी बड़ी मात्रा में प्रकट होता है, उसकी सावधानीपूर्वक खोज करने के लिए सबको बुद्धि की आवश्यकता है....”

“पुनर्स्थापित किए गए स्वर्ग तक पहुँचने के लिए कोई मध्य मार्ग नहीं है। इन अंतिम दिनों के लिए मनुष्य को दिया गया संदेश यह नहीं है कि वह मानवीय युक्ति-रचना के साथ मिश्रित हो जाए....”

“जिन्हें परमेश्वर ने विश्वास के उच्च पदों पर प्रतिष्ठित किया है, वे स्वर्ग के प्रकाश से फिरकर मानवीय बुद्धि की ओर मुड़ सकते हैं.... वे सब, जो ऐसा चरित्र धारण करना चाहते हैं जो उन्हें परमेश्वर के साथ सहकर्मी बनाए और परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त करने योग्य ठहराए, उन्हें परमेश्वर के शत्रुओं से अपने को पृथक करना होगा, और उस सत्य को दृढ़ता से बनाए रखना होगा जो मसीह ने यूहन्ना को जगत को देने के लिए प्रदान किया था।”

Manuscript Releases, volume 18, 30-36.

जिन “सब” को “बुद्धि” की आवश्यकता है, वे उन सबका प्रतिनिधित्व करते हैं जो ऐसी परीक्षात्मक प्रक्रिया में लाए जाते हैं जो अंततः आराधकों के दो वर्ग उत्पन्न करती है। “बुद्धिमान” वे हैं जो आवश्यक “बुद्धि” प्राप्त कर लेते हैं। यह परीक्षात्मक प्रक्रिया तब आरंभ होती है जब यीशु मसीह का प्रकाशन मानवीय अनुग्रह-अवधि के समाप्त होने से ठीक पहले खोल दिया जाता है। वह खोला जाना “ज्ञान की वृद्धि” का आरंभ करता है। जो लोग यीशु मसीह के प्रकाशन से संबंधित इस परीक्षा का सामना करते हैं, वे भविष्यवाणी-संबंधी ज्ञान का वह “तेल” प्राप्त करेंगे, जो रविवार की व्यवस्था के समय पूर्वी पवन के आगमन से पहले मार्गदर्शन करने, तैयार करने, और पवित्र ठहराने के लिए अभिप्रेत है। “भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष” स्वर्ग की नकली रोटी का प्रतीक है, जिसे या तो खाना है या अस्वीकार करना है।

गलील में, कफरनहूम के सभागृह में, यीशु ने अपने सेवकाई-काल के किसी भी अन्य अवसर की अपेक्षा एक ही घटना में अधिक अनुयायियों को खो दिया। वहाँ परीक्षा यह थी कि क्या मसीह के भविष्यवाणी-संबंधी वचन शाब्दिक थे या आत्मिक; और जो इस परीक्षा में असफल हुए, वे इसलिए असफल हुए—क्योंकि वे यह भूल गए थे कि मनुष्य को परमेश्वर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन से जीवित रहना है। मसीह ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वही स्वर्ग से उतरी हुई रोटी है, और जो इस परीक्षा में असफल हुए उन्होंने सत्य को मानवीय बुद्धि के साथ, जिसका प्रतिनिधित्व यूनानियों द्वारा किया गया था, मिश्रित कर दिया।

हव्वा द्वारा वाटिका की विफलता आरम्भ होने से पहले, मसीह ने आदम और हव्वा दोनों को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल में से न खाने की आज्ञा दी थी। सनातन सुसमाचार के तीन चरणों में पहला है—परमेश्वर का भय।

“मन को प्रकाशितवाक्य के विस्मयकारी सत्यों को ग्रहण करने दो, और तब वह अपनी शक्तियों को तुच्छ विषयों पर लगाने में कभी संतुष्ट न होगा; वह घृणा के साथ उस निकृष्ट साहित्य और निष्फल मनोरंजनों से विमुख हो जाएगा जो आज के युवाओं को नैतिक रूप से भ्रष्ट कर रहे हैं। जिन्होंने बाइबल के कवियों और मनीषियों के साथ संगति की है, और जिनकी आत्माएँ विश्वास के वीरों के महिमामय कार्यों से उद्वेलित हुई हैं, वे विचार के उन समृद्ध क्षेत्रों से हृदय में कहीं अधिक शुद्ध और मन में कहीं अधिक उन्नत होकर निकलेंगे, मानो वे सर्वाधिक विख्यात लौकिक लेखकों का अध्ययन करने में लगे रहे होते, या संसार के फिरौनों, हेरोदों और कैसरों के पराक्रमों का चिंतन और महिमामंडन कर रहे होते।”

“युवकों की शक्तियाँ अधिकांशतः सुप्त पड़ी रहती हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के भय को बुद्धि का आरम्भ नहीं बनाते। प्रभु ने दानियेल को बुद्धि और ज्ञान दिया, क्योंकि वह किसी ऐसी शक्ति के प्रभाव में न आने वाला था जो उसके धार्मिक सिद्धान्तों में बाधा डाले। हमारे पास बुद्धि, स्थिरता और ठोस मूल्य वाले मनुष्य इतने कम क्यों हैं, इसका कारण यह है कि वे स्वर्ग से अपने को पृथक करके महानता प्राप्त करना चाहते हैं।” Messages to Young People, 255, 256.

हव्वा ने अपना “परमेश्वर का भय” खो दिया। उसे परमेश्वर के वचनों पर कांप उठना चाहिए था, जो एक लाख चवालीस हज़ारों का एक गुण है। परमेश्वर का भय तीन परीक्षाओं में पहली है, और यह तब आरम्भ होती है जब

भविष्यद्वाणी का वचन खोला जाता है, जो अंततः बुद्धिमानों का एक वर्ग और मूर्खों का एक वर्ग उत्पन्न करता है। जो बुद्धिमान ठहराए जाने के लिए नियत हैं, उनके लिए आरम्भ यह है कि वे परमेश्वर के वचन पर कांप उठें। हव्वा ने ऐसा नहीं किया, और जब वह परीक्षा-प्रक्रिया के दूसरे चरण के सामने लाई गई, तो वह परमेश्वर की महिमा करने में असमर्थ रही; और तब वह न्याय की घड़ी के सम्मुख लाई गई, जहाँ उसने लौदीकिया के नंगेपन को प्रकट किया।

“जो कोई मसीही चरित्र को सिद्ध करना चाहता है, उसे मसीह का जूआ उठाना होगा। यदि वे मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में एक साथ बैठना चाहते हैं, तो उन्हें इस पृथ्वी पर रहते हुए उसी से सीखना होगा। मसीह ने अपने ही को प्रसन्न नहीं किया। उसका समस्त जीवन एक शुद्ध, निःस्वार्थ परोपकार के विकास का जीवन था। उसने पतित संसार के सामने, शैतान और उसके सभागृह के सामने, स्वर्ग के समस्त ब्रह्मांड के सामने, और उन लोकों के सामने जो पतित नहीं हुए, यह प्रदर्शित करने के लिए मानव-स्वभाव धारण किया कि मानव-स्वभाव, उसकी दिव्य प्रकृति के साथ संयुक्त होकर, परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति पूर्णतः आज्ञाकारी बन सकता है। सबको यह पूछना आवश्यक है, ‘उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?’ परमेश्वर ऐसे दीन, खेदित हृदय चाहता है, जो उसके वचन से कांपते हैं। केवल दैवी वेदी से ही हम उस स्वर्गीय मशाल को प्राप्त कर सकते हैं, जो प्राप्त होने पर हमें अपनी अयोग्यता का पूर्ण बोध कराती है, और मसीह की महिमा और गौरव को हमारे सामने प्रकट करती है। जब यह देखा जाता है, तब परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अधीन कर देता है, और वह हमें समस्त सत्य में ले चलेगा।” Bible Echo, July 20, 1896.

सत्य और त्रुटि का सम्मिश्रण शैतान का कार्य है, जिसकी पहचान अधर्म के भेद के रूप में की जाती है। अनुसंधानात्मक न्याय के अंतिम चरणों में समस्त मानवजाति का समझौता टेनेसी के नैशविल स्थित पार्थेनन मंदिर में सन्निहित है।

“हमारे युवाओं को उन विश्वविद्यालयों में भेजना बुद्धिमान नहीं है जहाँ वे अपना समय यूनानी और लैटिन का ज्ञान प्राप्त करने में लगाते हैं, जबकि उनके मस्तिष्क और हृदय उन अविश्वासी लेखकों की भावनाओं से भर दिए जाते हैं, जिनका वे इन भाषाओं में प्रवीण होने के लिए अध्ययन करते हैं। वे ऐसा ज्ञान प्राप्त करते हैं जो न तो किसी प्रकार आवश्यक है, और न ही महान शिक्षक की शिक्षाओं के अनुरूप है। सामान्यतः इस प्रकार शिक्षित लोगों में बहुत आत्म-महत्त्व होता है। वे सोचते हैं कि वे उच्चतर शिक्षा की पराकाष्ठा तक पहुँच गए हैं, और अभिमानपूर्वक व्यवहार करते हैं, मानो वे अब शिक्षार्थी न रहे हों। वे परमेश्वर की सेवा के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं। जो समय, साधन, और अध्ययन अनेक लोगों ने तुलनात्मक रूप से निरुपयोगी शिक्षा प्राप्त करने में व्यय किए हैं, उनका उपयोग ऐसी शिक्षा प्राप्त करने में किया जाना चाहिए था जो उन्हें सर्वांगीण स्त्री-पुरुष बनाती, जो व्यावहारिक जीवन के लिए योग्य हों। ऐसी शिक्षा उनके लिए अत्यन्त मूल्यवान होती।”

“जब विद्यार्थी हमारे विद्यालयों को छोड़कर जाते हैं, तो वे अपने साथ क्या लेकर जाते हैं? वे कहाँ जा रहे हैं? वे क्या करने वाले हैं? क्या उनके पास वह ज्ञान है जो उन्हें दूसरों को सिखाने योग्य बनाएगा? क्या उन्हें बुद्धिमान पिता और माताएँ बनने के लिए शिक्षित किया गया है? क्या वे एक परिवार के प्रधान के रूप में बुद्धिमान शिक्षकों की भाँति खड़े हो सकते हैं? क्या अपने गृह-जीवन में वे अपने बच्चों को इस प्रकार शिक्षा दे सकते हैं कि उनका परिवार ऐसा हो जिसे परमेश्वर प्रसन्नता के साथ देख सके, क्योंकि वह स्वर्ग के परिवार का एक प्रतीक है? क्या उन्होंने वही एकमात्र शिक्षा प्राप्त की है जिसे वास्तव में ‘उच्च शिक्षा’ कहा जा सकता है?”

“उच्च शिक्षा क्या है? किसी भी शिक्षा को उच्च शिक्षा नहीं कहा जा सकता, जब तक वह स्वर्ग की समानता न धारण करे, जब तक वह युवा पुरुषों और युवा स्त्रियों को मसीह के सदृश होने की ओर न ले जाए, और उन्हें इस योग्य न बनाए कि वे परमेश्वर के स्थान पर अपने परिवारों के प्रधान के रूप में खड़े हो सकें। यदि अपनी विद्यालयी शिक्षा के दौरान कोई युवा पुरुष यूनानी और लैटिन का ज्ञान, तथा अविश्वासी लेखकों की रचनाओं में निहित विचारों को प्राप्त करने में असफल रहा हो, तो उसने कोई विशेष हानि नहीं उठाई है। यदि यीशु मसीह ने इस प्रकार की शिक्षा को अनिवार्य समझा होता, तो क्या वह इसे अपने चेलों को न देता, जिन्हें वह उस महानतम कार्य के लिए शिक्षित कर रहा था जो कभी नश्वर मनुष्यों को सौंपा गया था—कि वे संसार में उसका प्रतिनिधित्व करें? परन्तु इसके स्थान पर, उसने उनके हाथों में पवित्र सत्य सौंपा, ताकि वह अपनी सरलता में संसार को दिया

जाए।”

“ऐसे समय आते हैं जब यूनानी और लैटिन के विद्वानों की आवश्यकता होती है। कुछ लोगों को इन भाषाओं का अध्ययन करना चाहिए। यह उचित है। परन्तु सभी को, और न ही बहुतों को, उनका अध्ययन करना चाहिए। जो लोग यह सोचते हैं कि उच्चतर शिक्षा के लिए यूनानी और लैटिन का ज्ञान अनिवार्य है, वे दूर की नहीं देख सकते। और न ही उस वस्तु के रहस्यों का ज्ञान, जिसे संसार के लोग विज्ञान कहते हैं, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए आवश्यक है। शैतान ही है जो मन को कुतर्क और परम्परा से भर देता है, जो सच्ची उच्चतर शिक्षा को बाहर कर देते हैं, और जो सीखने वाले के साथ नष्ट हो जाएंगे।”

“जिन लोगों ने मिथ्या शिक्षा प्राप्त की है वे स्वर्ग की ओर नहीं देखते। वे उसे नहीं देख सकते जो सच्चा प्रकाश है, ‘जो जगत में आनेवाले हर एक मनुष्य को प्रकाशित करता है।’ वे अनन्त वास्तविकताओं को मृग-मरीचिका समझते हैं, एक परमाणु को संसार कहते हैं, और संसार को एक परमाणु। तथाकथित उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके बहुतों के विषय में परमेश्वर घोषित करता है, ‘तू तराजू में तोला गया, और तू घटिया पाया गया,’—व्यावहारिक कार्य-व्यवहार के ज्ञान में घटिया, समय का सर्वोत्तम उपयोग करना कैसे है इसके ज्ञान में घटिया, और यीशु के लिये परिश्रम करना कैसे है इसके ज्ञान में घटिया।” Review and Herald, August 17, 1897.

नैशविल के अग्नि-गोले की चेतावनी किसी मनमाने नगर के विषय में नहीं है; यह सेवेंथ-डे एडवेंटिस्टों, संयुक्त राज्य अमेरिका, और संसार पर लाया गया प्रत्यक्ष न्याय है। नैशविल के अग्नि-गोले एडवेंटवाद की विभिन्न श्रेणियों, पृथ्वी के पशु, और संसार के लिए भिन्न-भिन्न गुणधर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं। नैशविल के अग्नि-गोले मिथ्या शिक्षा पर परमेश्वर का न्याय है, जिसका प्रतीक भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

“विभिन्न प्रकार के प्रतीकों के द्वारा प्रभु यीशु ने यूहन्ना के सामने उन लोगों के दुष्ट चरित्र और मोहक प्रभाव को प्रकट किया, जो परमेश्वर की प्रजा पर अपने उत्पीड़न के कारण विशिष्ट ठहरे हैं। इस पृथ्वी के इतिहास की समाप्ति में जो अधर्म का भेद इतनी बड़ी मात्रा में प्रकट होता है, उसका सावधानीपूर्वक अन्वेषण करने के लिए सबको बुद्धि की आवश्यकता है। संसार की शासक शक्तियों के अधीन रहने वाले निवासियों के उन घृणित कार्यों का, जो अपने को गुप्त समार्यों और संघबंधनों में बाँध लेते हैं और परमेश्वर की व्यवस्था का आदर नहीं करते, परमेश्वर द्वारा किया गया प्रकटीकरण सत्य के प्रकाश को रखने वाले लोगों को इन सब बुराइयों से सर्वथा अलग रहने के योग्य बनाना चाहिए। संसार के सब मिथ्या धर्मावलंबी अधिकाधिक अपने दुष्कर्म प्रकट करेंगे; क्योंकि केवल दो ही पक्ष हैं—वे जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं, और वे जो परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करते हैं।...”

“स्त्री के वंश और सर्प के वंश के बीच की शत्रुता प्रभु द्वारा स्पष्ट रूप से निर्धारित की गई है। ‘और मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।’ ‘और आदम से उसने कहा, क्योंकि तू ने अपनी पत्नी की बात मान ली, और उस वृक्ष का फल खाया, जिसके विषय में मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना: इसलिए तेरे कारण भूमि शापित है; तू जीवन भर कष्ट उठाकर उससे भोजन करेगा; वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी; और तू खेत की उपज खाएगा; अपने माथे के पसीने की रोटी खाएगा, जब तक कि तू मिट्टी में फिर न मिल जाए; क्योंकि उसी में से तू लिया गया है; क्योंकि तू मिट्टी ही है, और मिट्टी में ही फिर लौट जाएगा।’”

“अपने ही मार्ग पर चलकर, शैतान के प्रलोभनों के साथ सामंजस्य में कार्य करके और परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरोध में, मनुष्य ने व्यर्थ ही अपने आपको ऊँचा उठाने और धन्य करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार उसने परमेश्वर की आज्ञाओं की अवज्ञा का अनुभवजन्य ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार वह भले और बुरे को जान गया; इस प्रकार उसने परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा और वफादारी खो दी और समस्त मानव-परिवार पर बुराई और दुःख के बाढ़-द्वार खोल दिए। आज कितने लोग यही प्रयोग कर रहे हैं! मनुष्य कब सीखेगा कि उसकी सुरक्षा का एकमात्र साधन ‘यहोवा यों कहता है’ पर पूर्ण भरोसे के द्वारा ही है?”

“शैतान मानवीय उपायों के द्वारा अपनी स्वयं की कल्पनाओं को परमेश्वर की सन्तानों पर थोपने का प्रयास कर रहा है। वह इस प्रकार ग्रहण किया जाना चाहता है मानो वह परमेश्वर हो, अथवा यहाँ तक कि उसे परमेश्वर से भी ऊपर स्थान दिया जाए।

“विश्राम-दिन को सप्ताह के पहले दिन में बदलकर वह मनुष्यों को परमेश्वर की घोषणाओं पर अविश्वास करने के लिए प्रवृत्त करता है, और इस प्रकार अपनी ही चालों और योजनाओं को ऐसा मानने के लिए प्रेरित करता है कि वे उनकी अपनी दृष्टि और उनकी विकृत बुद्धि में अत्यन्त बुद्धिमान प्रतीत हों। मानवीय नीति के द्वारा वह मनुष्यों को इस प्रकार ले चलता है कि वे परमेश्वर की प्रत्यक्ष आज्ञाओं को मानवीय परम्परा की अपेक्षा कम प्रभावशाली समझें, और उस व्यवस्था से विचलन को, जो सदा पवित्र और न्यायी और उत्तम है, तुच्छ बात मानें। वह देखता है कि इस प्रकार मानवीय साधनों को आज्ञाकारी बालकों के समान परमेश्वर के साथ सामंजस्य में चलने से रोककर, वह हमारे संसार में परमेश्वर के कार्य की सिद्धि में बाधा डाल सकता है।”

“परंतु मनुष्यों के साथ शैतान की वे मिलीभगतें, जो उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर खड़े हैं, अब भी उतनी ही भय और परिहार की वस्तु हैं, जितनी तब थीं जब पाप के प्रयोग की परीक्षा हमारे आदि माता-पिता के मामले में की गई थी। मुझे यह कहने की शिक्षा दी गई है कि जो पुरुष परमेश्वर के कार्य में उत्तरदायित्व के पदों पर नियुक्त किए गए हैं, उन्होंने दूसरों पर नियंत्रण रखने के अपने अधिकार का अत्यधिक मूल्यांकन किया है। कोई मनुष्य जिस पद पर आसीन है, वह उसके चरित्र को परिवर्तित नहीं करता। कुछ ऐसे प्रतीत हुए हैं मानो वे यह अनुभव करते हों कि कलीसियाओं और सैनेटोरियमों के लिए योजना बनाना उन्हीं का कार्य है और उनके निर्णय पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जाना चाहिए। वे प्रत्येक कदम पर यीशु से सीखें। प्रत्येक मनुष्य के लिए वही सर्वोच्च अधिकार होना चाहिए।”

“वही, जो प्रायः हमारा शिक्षाकर्ता रहा है, कहता है, ‘मनुष्य के लिए अपने परमेश्वर के साथ दीनता से चलना कितना कठिन है, कि खेदित आत्मा में परमेश्वर का मार्ग ग्रहण करे और शैतान के उन प्रस्तावों को अस्वीकार करे जो बड़े सांसारिक लाभ उपस्थित करते हुए प्रतीत होते हैं।’ परमेश्वर द्वारा रखी गई एकमात्र दृढ़ नेव पर अटल खड़े रहने के स्थान पर मनुष्य का अपना ही मार्ग अपनाने का प्रभाव बार-बार प्रकट हुआ है। जिन सीधे मार्गों को परमेश्वर ने प्रकट किया है उनमें चलने से इनकार करना उन्हें भ्रम में ले आएगा और उन अन्य लोगों को, जिन पर यही परीक्षा और कसौटी आती है, बुद्धि न सिखाएगा। मनुष्य कब सीखेगा कि परमेश्वर परमेश्वर है, मनुष्य नहीं, कि वह बदल जाए?”

“कुछ लोग जो सीधे मार्ग से भटक गए हैं, उन उत्तरदायित्वों को अपने हाथ में लेने के लिए निरन्तर उत्कंठा में रहे हैं जिन्हें परमेश्वर ने उन पर नहीं रखा है। परमेश्वर प्रत्येक सेवक और प्रत्येक वैद्य को सत्य की सरलता बनाए रखने के लिए बुलाता है। परमेश्वर का पुत्र, जो पुराने और नए दोनों नियमों में प्रकट किया गया है, आज हमारे संसार का उद्धारकर्ता है। प्रत्येक चिकित्सकीय मिशनरी को अपना प्रशिक्षण उसी से प्राप्त करना है। यदि वह अपने को वायु के अधिकार के प्रधान से पृथक न करेगा, तो वह उन प्राणियों को भटका देगा जो उस पर विश्वास रखते हैं। सब लोग उन मनुष्यों से सावधान रहें जो इस प्रकार शिक्षित और ऊँचा उठाए गए हैं कि उनकी योजनाएँ साधारण लोगों की समझ में नहीं आ सकतीं।”

“पाप की कुटिल चालें असीम कल्पना से भी परे हैं। प्रत्येक विपत्ति, प्रत्येक दुःख और मृत्यु, न केवल बुराई की शक्ति का, वरन् जीवित परमेश्वर की सत्यता का भी प्रमाण है। सत्य को, जीवित परमेश्वर के उस वचन को, जो सदा बना रहता है, और जो आज्ञाकारिता के द्वारा जीवन देता है, जान लेने के पश्चात्, शैतान की चातुरी के अनुरूप होने में मनुष्य की दुर्बलता अत्यन्त विचित्र है। जो कोई परमेश्वर से शिक्षा पाता है, वह मसीह को उसका पुत्र स्वीकार करता है। जो कोई परमेश्वर की ज्ञात घोषणाओं पर विश्वास नहीं करता, वह पाप की प्रबलता को प्रकट करता है, और जीवन तथा अमरता की उस ओर कार्य नहीं कर रहा है, जो सत्य के पूर्ण पवित्रीकरण के द्वारा प्रकाश में लाई जाती हैं। जब तक वे चरित्र, वचनों और आत्मा में परिवर्तन नहीं करते, प्राण नष्ट हो जाएंगे।”

“बहाल किए गए स्वर्ग के लिए कोई मध्य मार्ग नहीं है। इन अंतिम दिनों के लिए मनुष्य को दिया गया संदेश मानवीय युक्तियों के साथ मिश्रित होने के लिए नहीं है। हमें सांसारिक वकीलों की नीति पर आश्रित नहीं होना है। हमें प्रार्थना करने वाले नम्र पुरुष होना चाहिए, और उन लोगों के समान आचरण नहीं करना चाहिए जो शैतान की कार्यकारिणी शक्तियों के द्वारा अन्धे कर दिए गए हैं। ”

“अनेक लोगों के पास विश्वास तो है, परन्तु ऐसा विश्वास नहीं जो प्रेम के द्वारा क्रियाशील हो और आत्मा को शुद्ध करे। उद्धार देने वाला विश्वास केवल सत्य में एक साधारण बौद्धिक सहमति मात्र नहीं है। ‘दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती हैं, और थरथराती हैं।’ परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा मनुष्यों को ऐसा विश्वास प्रदान करती है जो एक प्रेरक शक्ति है, जो चरित्र को ढालती है, और मनुष्यों को केवल बाह्य औपचारिक कर्मों से ऊपर ले जाती है। वचन, कर्म, और आत्मिक भाव इस तथ्य की साक्षी दें कि हम मसीह के अनुयायी हैं।”

“परमेश्वर ने जो सबसे बड़ा प्रकाश और आशीष प्रदान किया है, वह इन अंतिम दिनों में अपराध और धर्मत्याग के विरुद्ध कोई सुरक्षा नहीं है। जिन्हें परमेश्वर ने विश्वास की उच्च पदों पर प्रतिष्ठित किया है, वे स्वर्गीय ज्योति से फिरकर मानवीय बुद्धि की ओर मुड़ सकते हैं। तब उनका प्रकाश अंधकार बन जाएगा, उनकी परमेश्वर-प्रदत्त क्षमताएँ फंदा ठहरेंगी, और उनका चरित्र परमेश्वर के लिए ठोकर का कारण होगा। परमेश्वर का उपहास नहीं किया जा सकता। उससे दूर हो जाना अपने निश्चित परिणामों के साथ पहले भी रहा है और सदा रहेगा। ऐसे कार्यों का करना जो परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं, यदि उनका निश्चयपूर्वक पश्चात्ताप करके त्याग न किया जाए, तो उन्हें उचित ठहराने का प्रयत्न करने के स्थान पर, दुष्कर्मों को छल में कदम-दर-कदम आगे बढ़ा देगा, यहाँ तक कि बहुत-से पाप बिना दंड के किए जाएँगे। जो कोई ऐसा चरित्र रखना चाहता है जो उसे परमेश्वर का सहकर्म बनाए और परमेश्वर की सराहना प्राप्त कराए, उसे परमेश्वर के शत्रुओं से अपने को अलग करना होगा, और उस सत्य को बनाए रखना होगा जो मसीह ने यूहन्ना को संसार को देने के लिए दिया था।” Manuscript Releases, volume 18, 30-36.